Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 1, Issue 1 - 2018

स्नातक स्तर के विधार्थियों की संवेगात्मक बुध्दि एवं सामाजिक व्यवहार में सह सम्बन्ध का अध्ययन

अवधेश कुमार*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन मे अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षा सभ्य समाज का आधार हैं शिक्षा मनुष्य के अन्दर के अज्ञान, असंतोष को नष्ट करती है तथा मानवीय गुणों का विकास करती हैं भारतवर्ष के प्रान्तों में अनेक विद्यालयों एवं संस्थानों द्वारा विद्यार्थी आदर्श शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ज्ञानार्जन करता हैं। विद्यालय द्वारा प्राप्त होने वाली शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह है कि विद्यालय के द्वारा ऐसा ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए जो कि विद्यार्थियों की आवश्यकताओ के अनुरुप हो और जिससे विद्यार्थियों का मानसिक, नैतिक, सामाजिक, चारित्रिक विकास हो सके।

जन्म के समय शिशु में सामाजिकता लगभग शून्य होती है। जैसे–जैसे उसका शारीरिक तथा मानसिक विकास होने लगता है, वैसे–वैसे उसका समाजिकरण भी होने लगता है। वह अपने माता–पिता, परिवार के सदस्यों, संगी–साथियों तथा अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है जिसके फलस्वरुप वह सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं, रूढ़ियों आदि के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है तथा सामाजिक जगत में अपने को समायोजित करने का प्रयास करता है। समाजिकरण की इस प्रक्रिया से बालक का सामाजिक विकास की उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण के सामाजिक अनुकूलन करता है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्कताओं व रूचियों पर नियंत्रण करता है, दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरुप व्यक्ति समाज का एक मान्य सहयोगी, उपयोगी तथा कुशल नागरिक बन जाता है। समाज मे रह कर ही व्यक्ति अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति करता है तथा जन्मजात प्रवृत्तियों व योग्यताओं का विकास करता है। समाज में रह कर ही वह दूसरों से सम्पर्क करता है, समाज के मूल्यों, विश्वासों तथा आदर्शो में आस्था रखने लगता है तथा समाज की जीवन–शैली को अपनाता है उसमें सहअस्तित्व की भावना आ जाती है, वह सामाजिक हित में तथा लोककल्याण की भावना से अपने निहित स्वार्थ का त्याग करना सीख जाता है तथा सामाजिक गुणों को विकसित करके समाज मे अनुकूलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

बालक के संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य है कि संवेग वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति हिल जाता है या उत्तेजित हो जाता है यह उत्तेजनाकी स्थिति प्र्याप्त जटिल होती है संवेग अपने आप में एक मनोवैज्ञानिक स्थिति या अवस्था है।

*शोध–छात्र, शिक्षक शिक्षा संकाय, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, जमुनीपुर, कोटवा, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

संवेगात्मक विकास मनुष्य में शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक होता रहता है कुछ प्रतिकूल संवेग जैसे कि क्रोध, भय आदि है। संवेग को परिभाषित करने का सफल प्रयास किया गया है। युंग के अनुसार संवेग सम्पूर्ण व्यक्ति का तीव्र उपद्रव है जिसकी उत्पत्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से होती है तथा जिसके अन्तर्गत व्यवहार, चेतन, अनुभूति और चारित्रिक क्रियाएं शामिल है।

उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति में चार क्षेत्रों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। संवेगों को जानना, उन्हें स्वीकारना, उनके प्रति सही दृष्टिकोण या अभिवृत्ति रखना तथा उनके प्रति उचित अनुक्रिया करना। इस प्रकार स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों में आत्म–निर्भरता एवं आत्म–नियंत्रण की भावना जागृत हो जाती है जिससे वह अपने को समाज में ढ़ालना सीख लेता है एवं समाज में होने वाली अच्छी एवं बुरी बातो का भी ज्ञान हो जाता है तथा लोगो के मजाक एवं हंसी उठाने पर भी वह अपने संवेग को परिपक्वता के कारण उसका सहन कर लेता है यही विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में अलग–अलग लोगों से मिलना जुलना एवं उनके साथ रहना एवं उस स्थिति में अपना समायोजना बनाना भी उनका संवेगात्मक परिपक्वता का आधार होता है।

सुव्यवस्था या अच्छे ढग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो जाए मानसिक द्वन्द न उत्पन्न हो पाये। इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि अन्य प्राणियों की भाँति मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ होती है। ये ही आवश्यकताएँ ही व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करती है और वह आगे बढ़ता है। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है तो उसे सन्तोष का अनुभव होता है किन्तु जब लक्ष्य प्राप्ति करने में उसे बाधाओं का सामना करना पड़ता है तो उसे एक अप्रिय अनुभूति होती है। जिसे कुण्ठा, असन्तोष, हताशा, निराशा कहते है। इसी प्रकार जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और रूचियों के प्रतिकूल शक्तियों का सामना करना पड़ता है तो उसके अन्दर मानसिक द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकर कुण्ठा और मानसिक द्वन्द्व के परिणामस्वरूप व्यक्ति में मानसिक तनाव उत्पन्न होता है तनाव के कारण व्यक्ति के मन में एक प्रकार की उथल–पुथल मच जाती है। जिसे दूर करने के लिए वह बाधाओं को दूर करने में सफल रहा तो वह वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है। यदि व्यक्ति यदि बाधाओं को दूर करने में असमर्थ रहा और उसने आवांछनीय मार्ग को अपना लिया तो कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है।

किशोरावस्था मे बालक के संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में सार्थक सहसम्बन्ध होता है कि नही? इसी बात को जानने का प्रयास शोधकर्ता द्वारा किया गया। सामाजिक व्यवहार प्रायः दो शब्दों से मिलकर बना है सामाजिक एवं व्यवहार। सामाजिक व्यवहार का सम्बन्ध मनुष्य की समष्टि के आचार–व्यवहार, क्रिया,–कलाप, रहन–सहन, जीवन शैली आदि से है।

सामाजिक से तात्पर्य समाज से होता है। इसलिए सर्वप्रथम समाज के अर्थ एवं परिभाषाओं को व्याख्यायित किया गया है। समाज मानव समष्टि का पर्याय होता हैं महान यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने कहा है कि–मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहकर ही उसका विकास हो सकता है यदि कोई व्यक्ति ऐसा है जो समाज में नही रह सकता है या जिसे समाज की आवश्यकता ही न हो वह या तो देवता हो

सकता है या तो जंगली जानवर। मनुष्य एवं समाज एक दूसरे के पूरक हैं। समाज में रह कर व्यक्ति अपने व्यतित्व का निर्माण करता है तथा समाज के मूल्यों, नियमों तथा प्रतिबन्ध द्वारा नियंत्रित होता है।

सामान्य रूप से लोग समाज को मानव समूह मानते है परन्तु वास्तव में समाज निराकार तथा अमूर्त है यह मानवों का समूह नहीं बल्कि मनुष्यों के सामाजिक सम्बन्धों का समूह है। राइट ने ठीक ही कहा है–"समाज एक वास्तविक वस्तु है किन्तु वास्तव में इसका आशय एक अवस्था, एक दशा और रूप से है। इसलिए यह अमूर्त है। समाज को स्पर्श या दृश्य इन्द्रियों से परख नहीं सकते केवल इसका अनुभव हो कर सकते है।"

समाज मनुष्य का रक्षक हैं जन्म से मृत्यु तक भोजन, आश्रय, शारीरिक सुरक्षा, व्यक्तित्व विकास के लिए हम समाज पर आश्रित रहते हैं। समाज मनुष्य के लिए स्वाभाविक भी है। भौतिक तथा शारीरिक के अतिरिक्त मानसिक भूख भी मनुष्य की समाज में पूर्ण होती है। इसलिए मनुष्य नैसर्गिक प्रवृत्तियाँ समाज में उसे रहने के लिए बाध्य करती है। समाज मनुष्य का उन्नायक भी है। आदिम मनुष्य और आधुनिक मानव की तुलना में जो अन्तर दिखायी पड़ता है वह समाज की गतिशीलता का ही परिणाम है। पीढ़ी दर पीढ़ी से चले आ रहे सांस्कृतिक विरासत के प्रचलन ने ही आधुनिक मानव को उसका यह सुसंस्कृत स्वरूप प्रदान किया है।

शोध का शीर्षक

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में सहसम्बन्ध है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर है।
2. स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक व्यवहार में अन्तर है।
3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध है।
4. स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के माध्य सहसम्बन्ध है।
5. स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध है।

प्रस्तुत शोध की विधि

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी शोध समस्या में अनुसंधान के सर्वेक्षण के बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया विश्लेषण की होती है। एक शैक्षिक अनुसंधानकर्ता को तार्किक चिन्तन के आधार पर परीक्षण योग्य परिकल्पना का निमार्ण करना चाहिए। परिकल्पनाओं की स्वीकृत तथा अस्वीकृत इस बात पर निर्भर करती है कि यह अध्ययन क्षेत्र विशेष के वैज्ञानिक विकास में कितना योगदान करता है। प्रदत्तों का विश्लेषण एवं प्रदत्तों की व्याख्या के लिए किया जाता है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं शोध प्रक्रिया में आगमन में निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। प्रदत्तों को उपसमूहों में विभाजित कर उनका विश्लेषण एवं संश्लेषण इस प्रकार किया जाता है कि दी गयी परीक्षणीय परिकल्पना स्वीकृत अथवा अस्वीकृत हो सके। अन्तिम परिणाम नये सिद्धान्त की खोज अथवा सामान्यीकरण होता है। प्रदत्तों के सम्भागीय अंकों का परीक्षण तुलना द्वारा समूह के अन्तर्गत एवं किसी वाह्य कसौटी के आधार पर करते हैं।

प्रदत्तों के विश्लेषण के अन्तर्गत अनेक समूहों को विभिन्न प्रकार के अभिक्रम देकर उनकी अभिवृत्तियों की तुलना की जाती है तथा शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों के आधार पर किया जाता है। परिकल्पना से सम्बन्धित प्रदत्तों को मात्रात्मक रूप से संयोजित कर लेते है और नियंन्त्रित समूह का सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिणामों को परीक्षण करते हैं। साधारणतः विश्लेषण समूहों की तुलना करता है। परन्तु कभी–कभी प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर स्वयं ही उनके योग या अन्तर से भिन्नता ज्ञात हो जाती है।

इस प्रकार से उनमें सांख्यिकीय विधियों का वर्णन किया गया है, जिनके द्वारा प्राप्त आंकडों का विश्लेषण किया जाना है। प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विधियों से आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त 'परिणाम' व उनकी विवेचना की गयी है। उक्त कार्य को निम्न उपशीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

उद्देश्य–1 स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_1-स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर हैं।

H_{01}-स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–1.स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र० सं०	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (S_{ED})	टी–टनुपात (C.R. Value)	परिणाम
1.	छात्र	100	65.43	9.92	0.63	1.38	0.457	असार्थक < 0.05 (1.98)
2.	छात्राएँ	100	64.80	9.56				

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 65. 43 तथा 64.80 हैं तथा दोनो वर्गों का मानक विचलन क्रमशः 9.92 तथा 9.56 है। जिसकी मानक त्रुटि 1.38 है। दोनो समूह के परिगणित टी–अनुपात का मान 0.457 है जो .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिये दिये गये सारणी मान 1 98 से कम है। अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि .05 सार्थकता स्तर पर स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक बुद्धि में समानता पायी गयी। दोनों के संवेगात्मक बुद्धि में समानता पाये जाने का कारण यह हो सकता है कि दोनों महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् करते हैं जिनमें ये किशोरावस्था के आगे की अवस्था में प्रवेश करते है एवं वे अपने आपको समायोजित करने के लिए अपने संवेगों पर नियंत्रण रखते है। राज, पी० एन्थोनी (2011) के अध्ययन से इंगित होता है कि संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार, शहरी एवं ग्रामीण आदिवासी विद्यार्थियों के स्व–जागरूकता, स्व–प्रबन्धन सामाजिक जागरूकता एवं संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उद्देश्य 2 स्नातक स्तर के छात्र छात्राओं की सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_1-स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिकम व्यवहार मे सार्थक अन्तर है।

H_0-स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–2.स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक व्यवहार का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र० सं०	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर ($M_1 \sim M_2$)	मानक त्रुटि (S_{ED})	टी–टनुपात (C.R. Value)	परिणाम
1.	छात्र	100	20.32	5.06	1.09	0.728	1.49	असार्थक < 0.05 (1.98)
2.	छात्राएँ	100	19.23	5.24				

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक व्यवहार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 20.32 तथा 19.23 है तथा दोनों वर्गों का मानक विचलन क्रमशः 5.06 तथा 5.24 है। जिसकी मानक त्रुटि 0.728 है। दोनों समूह के परिगणित टी–अनुपात का मान 1.49 है जो .05 सार्थकता स्तर पर स्वायत्तता अंश ∞ के लिये दिये गये सारणी मान 1.98 से कम है। अतः मध्यमान का अन्तर उक्त सार्थकता स्तर पर असार्थक है और शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 0.5 सार्थकता स्तर पर स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में समानता

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

पायी गयी। दोनों के सामाजिक व्यवहार में समानता पाये जाने का कारण यह हो सकता है कि दोनों महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत् करते है जिनमें वे किशोरावस्था के आगे की अवस्था में प्रवेश करते है एवं वे समाज में अपना एक स्थान बनाना चाहते है एवं सामाजिकता से जुडने हेतु प्रयासरत् रहते है। समान अध्ययन से इंगित होता है जिसमें यादव, सत्य प्रकाश (2011) ने अध्ययन में पाया कि सामान्य पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सामाजिक समायोजन क्षमता समान पाया जाता हैं। अहमद एवं अन्य (2012) ने अध्ययन में पाया कि लिंग आधार पर सामाजिक बुद्धि एवं व्यवहार गुणों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

उद्देश्य–3 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना–

H_3-स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

H_{03}-स्नातकस्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–3.स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक

लिंग	N	सह सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
विद्यार्थी	200	0.239	0.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 3 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी के संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक के मान क्रमशः 0.239 हैं, जो कि 1.98 पर .05 पर सार्थकता मान .138 से अधिक है अतः .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है" निरस्त की जाती है। अर्थात् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि मे वृद्धि के साथ सामाजिक व्यवहार में वृद्धि तथा संवेगात्मक बुद्धि में कमी के साथ सामाजिक व्यवहार में कमी पायी गयी। सिंग एवं बग (2016) के अध्ययन में पाया गया कि नर्सिंग विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, तनाव प्रावारक एवं कॉलेज जीवन में समायोजन का एक–दूसरे के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। सिंह, रतन (2016) ने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

उद्देश्य–4 स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना–

H_4-स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

H_{04}-स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

सारणी संख्या–4.स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक

लिंग	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
छात्र	100	0.220	0.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 4 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक के मान क्रमशः 0.220 हैं, जो कि 1.98 पर .05 स्तर पर सार्थकता मान .195 से अधिक है अतः .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है" निरस्त की जाती है। अर्थात् स्नातक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि के साथ सामाजिक व्यवहार में वृद्धि तथा संवेगात्मक बुद्धि में कमी के साथ सामाजिक व्यवहार में कमी पायी गयी। सिम एवं बंग (2016) के अध्ययन में पाया गया कि नर्सिंग विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, तनाव प्रावारक एवं कॉलेज जीवन में समायोजन का एक–दूसरे के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। सिंह, रतन (2016) ने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

उद्देश्य–5 स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना–

H_5-स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सार्थक सम्बन्ध हैं।

H_{05}-स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–5.स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक

लिंग	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
छात्राएँ	100	0.271	0.05

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 5 से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी के संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक के मान क्रमशः 0.271 हैं, जो कि 1.98 पर .05 स्तर पर सार्थकता मान .195 से अधिक है अतः .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है" निरस्त की जाती है। अर्थात् स्नातक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक व्यवहार में सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि के साथ सामाजिक व्यवहार में वृद्धि तथा संवेगात्मक बुद्धि में कमी के साथ सामाजिक व्यवहार में कमी पायी गयी। सिम एवं बंग (2016) के अध्ययन में पाया गया कि नर्सिंग विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, तनाव प्रावारक एवं कॉलेज जीवन में समायोजन का एक–दूसरे के मध्य

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सिंह, रतन (2016) ने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. गुप्ता, एस0पी0 एण्ड गुप्ता ए (2007) साख्यिकी विधियॉ, इलाहाबाद: शारदा प्रकाशन ।

[2]. गुप्ता, एस0पी0 (2008) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन।

[3]. गुप्ता, एस0पी0 (2011) अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन।

[4]. गुप्ता, एस0पी0 (2012) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन।

[5]. पाठक पी0डी0, (2012) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

[6]. पाण्डेय राम शकल (2000) शिक्षा दर्शन आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

[7]. मंगल, एस0के0 (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड प्रकाशन।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.